डॉ अशोक कुमार सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर ,मैथिली विभाग

सर्व नारायण सिंह राम कुमार सिंह कॉलेज , सहरसा-852201

बी.एन.मंडल विश्वविद्यालय ,लालू नगर- मधेपुरा 852113

पाठ्यक्रम—बी.ए. प्रथम भाग, मैथिली प्रतिष्ठा- दोसर(द्वितीय) पत्र

पाठ्यांश—संकलन (निबंध संग्रह) 'शिक्षा'

शिक्षा निबंध म.म.मुकुंद झा 'बक्शी' द्वारा लिखल गेल अछि । गद साहित्यक जाहि रूप कें निबंध कहि अभहित कयल जायत अछि से अपन अभिधान सँ निश्चित रूपें वर प्राचीन अछि ।ई अलग बात अछि जे एकर शब्दार्थ क्रमशः बदलैत गेल । एकटा एहनो युग छल जखन निबंध शब्दक अर्थ छल जे जाहि मे किछु बान्हल जाय अथवा जे किछु बान्हल जाय ।एहि आधार पर कविता , गीत सभटा निबंधक परिधि मे समा जाइत छल , एहि लेल कि कविता वा गीत छन्द मे बान्हल जाइत अछि ।बस्तुतः निबंधक एक रूपें परिभाषा ताकब कठिन अछि ।

निबन्ध एक गोट 'निश्चित उद्देश्य' ल' गठित कयल जाइछ आ एहि मे उपस्थापन, ब्याख्या ओ द्रष्टान्त' क अपन पृथक महत्व होइछ । निबंध मे बहुत राशि बात रहय से हो कोनो आवश्यक नही छैक । निबन्ध रचनाक मूल सिध्यान्त अछि चयन आ ओकर सभ पक्ष कें समान रूपें प्रभावकारी बनायब ।विशुद्ध निबंधक सर्वाधिक विशिष्टता इएह मानल जायत छैक जे निबंधक लेखक अपन पाठकक प्रति अनौपचारिक अपनत्व ओ प्रतीक साहित्य-कल्पित भावें आत्म निवेदन करैत छथि । आत्मनिवेदनक ई स्वर तखनै सविशेष होइछ जखन ओहि मे आत्मनुभूति रहैछ । अनुभूति कें ब्यक्तित्व सँ फराक नहि बुझल जेतैक आ ताहि सँ निबंध में निबन्धकारक बयक्तित्व सर्वोपरि रहैछ । निबान्धकारक रुचि-अभिरूचिक प्रधानता रहैछ तें कहल गेल अछि जे निबंध निबन्धकारक कृति थिक । वस्तुतः निबंध, अभिब्यक्तिक ओ प्रकार थिक जकर कोनो विधि , पद्दति, विषय अथवा विचारक पूर्वहिं सँ कोनो धारणा नहि रहैछ । निबान्धकार जखन कोनो विषय पर कि' कह' चाहैत अछि तँ ओहि लेल ओ भाषा था शिल्पक चयन अपनहि मुताविक करैत अछि ।इएह कारण अछि जे निबान्धकार अनिवार्य रूपें आडम्बरहीन, सरल वो शुध्द हृदय सँ पाठक संग आत्मीय सम्बन्ध जोड़ैत अछि तदुपरांत स्पष्ट रूपें मनक बात कहैत छथि ।

वस्तुतः निवन्ध साहित्यक एहन विधा अछि जकरा स्थितिस्थापक कहल जा सकैछ ।ईएह कारण अछि जे कोनहु वस्तु निबंधक विषय बनि सकैछ। निबंध कें शैली व पद्यतिक स्वतंत्रता छैक तें निबंध विविधताक बीच कोनो रेखा खीचब कठिन छैक । कथा ,उपन्यास , एकांकी ओ यात्रा संस्मरण आदि निबंधक पार्थक्य जतवा स्थूल अछि, प्रवंध लेख ओ समीक्षा ततवे सूक्ष्म ।।

मैथिली मे निबंध परम्पराक प्रारम्भ एक दृष्टियें चन्दा झा सँ भेल । चन्दा झा मैथिली साहित्य मे नवोन्मेखक अग्रदूत भेलाह ।हिनक साहित्य साधना सँ मैथिली भाषाक अनेक आधुनिक संभावना प्रकट होम' लागल । प्रस्तुत संकलनक रूप मे मैथिली निबंध साहित्यक एहि विकासक क्रम कें उपस्थित करब अभीष्ट अछि ।तें ई कहि सकैत

छी जे ज्योतिरिश्वर सहित चन्दा झा सँ प्रारम्भ क' बर्तमान धरिक अनेक निबन्धकारक रचना कँ एहि मे संग्रहित कयल गेल अछि ।

"शिक्षा" निबन्ध एक उच्च कोटिक विवेचनात्मक निवन्ध अछि । एहि निबन्ध मे मिथिलाक शिक्षाक स्तरक मुख्य रूप सँ विश्लेषण कयल गेल अछि । लेखक एहि मे किछु दोष देखैत छथि । प्रबुद्धों लोक सभ कें वो दिग्भ्रमित देखैत छथि । वो सभ अपन पूर्वजक द्वारा शिक्षा-विषयक सम्पूर्ण आदर्श कँ विस्मृत कय देने छथि । किछु एहनो लोक सभ छथि जिनका मे अहंकार आओर संकुचित भावना छनि । ओ सभ शिक्षाक दृष्टिकोण विकासील देशक शिक्षा-प्रणालीक विशेषताक अनुकरण नहि करैत छथि ।जतय अहंकार, संकीर्णता आ सेहन्ता तीनों विद्दमान होय ,ओतए विकासक आशा नहि कयल जा सकैछ । लेखकक कहब छनि जे मिथिला समाज मे किछु लोक छथि जिनक मनोवृति मे विकृति आबि गेल अछि तें हुनक प्रवृति दूषित भय गेल अछि , हुनक बुद्धि भ्रष्ट भय गेल अछि ।अपना कें सभ दृष्टिकोण सँ उन्नत मानि उन्नतिक चेष्टा नहि करी से तँ निक बात नहि अछि ।प्रबुद्ध लोकक धारणा तँ सैह नै होयबाक चाही ।सामाजक एहन लोक अपन उन्नतिक लेल सतत प्रयत्नशील रहैछ । किएक तँ एहन लोक आत्म-प्रशंसा आत्मोन्नतिक मार्ग अवरुद्ध कय दैछ ।परिणाम स्वरूप जाति आ समाजक उन्नति नहि भय पबैछ । हम मिथिलावासी उन्नतिक मूलभूत बस्तु दिश दृष्टिपातो नहि करैत छी ।परिणामस्वरूप हमर जीवन पतोन्मुख भय गेल अछि ।निबन्धकार हमर बर्तमान दिशा ओ दशा दिस दृष्टिपात कय हतास भय जाइत छथि ।

निबन्धकार आधुनिक शिक्षाशास्त्रिक दुर्दशा देखि दुःखी भ' जाएत छथि वो शिक्षाक चारि प्रकार माननें छथि - शारीरिक, मानसिक, धार्मिक आओर नैतिक। चारो परस्पर संबंधित अछि ।चारो परस्पर मिलि पुरुषार्थक निर्माण करैछ । शारीरिक आ मानसिक शक्ति एक दोसर सँ घनिष्ट सम्बन्ध राखैत अछि ।एकक हानि भेला सँ दोसर स्वभाविक रूपें नष्ट भय जाइछ । शरीर कें स्वस्थ राखय लेल ब्यायाम, योगा नियमीत करब आवश्यक अछि । किएक तँ स्वस्थ्य शरीर मे स्वस्थ मनक विकास होइत छैक ।जिनकर शरीर स्वस्थ नहि रहतनि हुनकर मानसिक स्थिति कोना निक भय सकैछ ? योगाभ्यास करवा मे जे कियो आलस्य करैत छथि , वोही ब्यक्तिक शारीरिक मानसिक दुनूक संतुलन बिगड़व स्वभाविक अछि ।

केवल शारीरिक आ मानसिक शिक्षा सँ जीवनक उन्नयन नहि भय सकैछ । जीवनक सम्पूर्ण विकास हेतु धार्मिक आओर नैतिक शिक्षा प्राप्त करब आवश्यक अछि । धार्मिक शिक्षा सँ सत्य -असत्य आओर उचित-अनुचितक ज्ञान भ' जाइछ । ई ज्ञान भेला सँ अधार्मिक कार्य कँ प्रोत्साहन नहि भेटैत अछि ।नैतिक शिक्षा प्राप्त करला सँ हमर आचारण शुद्ध होइछ । हम सभ शिक्षाक सभ क्षेत्र मे निपुणता प्राप्त कयने छी , मुदा आलास्यप्रिय; आदम्बरप्रिय आओर मिथ्याभिमानी होमय कँ करणें जीवनक विकासशील क्षेत्र मे सफलता प्राप्त करय मे असमर्थ भय जाइत छी । प्राचीनकाल मे विश्वक सभ देश सँ हमर देश भारत आ मिथिला मे शिक्षा प्राप्त करे लेल आबैत छल । परन्तु आय हम सव विदेशी शिक्षाक अनुकरण करैत छी ।शिक्षाक उपरोक्त चारु क्षेत्र मे हम सभ विश्व कें नेतृत्व प्रदान कयलहुँ मुदा आय हमर दुर्भाग्य थिक जे हम सभ शिक्षा प्राप्त करय लेल दोसर दिस मुहँ तकैत छी ।मिथिला वासी कँ एहि सँ हानिये भेल अछि। हम मिथिला वासी क्रियाहीन भ' गेल छी । हमर विकास अवरुद्ध भ' गेल अछि । हम सब शारीरिक , धार्मिक आ नैतिक शिक्षा सँ बंचित भ' गेल छी ।परंतु मानसिक शिक्षा अवलंबनक कारण हमर लोकनि अखनों गौरवक अनुभव करैत छी। विश्वक नजरि में अखनों हम सब प्रतिष्ठित मानल जाइत छी ।जँ हमरा सभ अपन सर्वांश उन्नतिक आकांक्षा राखैत छी तँ हमर लोकनि कँ सभ प्रकारक शिक्षा प्राप्त करबाक चेष्टा करय

परत । आन देशक लोक हमरा सभ सँ बेसी साकांक्ष अछि । यद्दपि हुनका मे सँ बहुतो कें ओहि निरुपम उपाधिक शब्दार्थिक ज्ञान नहि छनि । हमर प्रसिद्धिक मुख्य कारण हमर पूर्वजक कीर्ति अछि । हमर अपन कोनो कीर्ति नहि अछि । हमर पूर्वज विवेकी एवं सर्वगुण सम्पन्न छलाह ।वो सभ अपन ज्ञानज्योति सँ सम्पूर्ण विश्व कें ज्योतिर्मय कयलनि ।